WITWAVES
JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
Vol-2 Issue-2
(International Peer-Reviewed E-Journal)
(February 2025)

सागर संभाग के अपवाह तंत्र का भौगोलिक अध्ययन महत्व एवं प्रभाव

राजकुमार मिश्रा
शोधार्थी

सार संक्षेप

सागर संभाग में नदियां कृषि के लिए अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह अपने प्रभाव क्षेत्र में उपजाऊ बना देती है। जैसे दमोह जिले में सोनार, व्यारमा का बेसिन, खुरई में बेतवा का बेसिन और टीकमगढ़ जिले में बेतवा, उर, धसान आदि के बेसिन छतरपुर है एवं पन्ना जिले केन नदियों का बेसिन है। नदियों द्वारा सिंचाई के लिये नहरें निकाली गई है, जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण संभाग की बण्डा तहसील में शाहगढ़ के पास बीना नदी पर बांध बनाकर सिंचाई के लिए नहर निकाली गई है, इसके साथ ही नदियों से मछलियां भी पकड़ी जाती है।

कुँजीभूत शब्द

अपवाहतंत्र, भौगोलिक, नदियों, बेसिन।

प्राक्कथन

किसी भी क्षेत्र का अध्ययन करने के पूर्व उस क्षेत्र के अपवाह तंत्र का अध्ययन करना आवश्यक है, क्योंकि इसका प्रभाव उस क्षेत्र के आर्थिक विकास पर पड़ता है। संभाग में जल प्रभाव तंत्र पर धरातलीय संरचना का प्रभाव अधिक पड़ा है। संभाग का ढाल दक्षिण-पश्चिम के उत्तर तथा पूर्व की ओर है, अतः नदियों का प्रवाह भी दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर है जिसका प्रमाण बेतवा, धसान, सोनार आदि नदियों के प्रवाह दिशा से स्पष्ट होता है। धरातल की रचना का पता केन, बीना आदि नदियों से बने प्रपातों से चलती है। संभाग की नदियां यमुना की सहायक है, यह नदियां दक्षिण में भाण्डेर तथा कैमूर श्रेणियों से निकलती है तथा सम्पूर्ण संभाग का जल उत्तर की ओर ले जाती है।

उद्देश्य

किसी भी क्षेत्र का अध्ययन करने के पूर्व उस क्षेत्र के अपवाह तंत्र का अध्ययन करना आवश्यक है क्योंकि इसका प्रभाव उस क्षेत्र के आर्थिक विकास पर पड़ता है। अपवाह तंत्र के अध्ययन के मुख्य उद्देश्य नदियों के महत्व और उनका दैनिक उपयोग में महत्वपूर्ण भूमिका का आंकलन करना ही शोधार्थी का उद्देश्य है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र प्राथमिक एवं द्वितीय समकों पर आधारित है। द्वितीय समक जिला भू-अभिलेख कार्यालय विभाग के सौजन्य से प्राप्त हुए है।

संभाग की प्रमुख नदियां

संभाग की प्रमुख नदियां बेतवा, धसान और केन है तथा इनकी सहायक नदियां बीना, जामनी, बेवस, सोनार, ब्यारमा, कोपरा, उर्मिल आदि हैं-

बेतवा नदी

3प्राचीनकाल में इसे वेत्रवती के नाम से पुकारा जाता था जो विदिशा तथा जिले की सीमा से प्रवाहित होती हुई टीकमगढ़ जिले के उत्तरी-पश्चिमी भाग से निवाड़ी तहसील के ओरछा से लगभग 20 किमी. दक्षिण की ओर बहती है, इसकी सहायक नदियां बीना, धसान और जामिनी है।

धसान नदी

यह नदी रायसेन से निकलकर संभाग के दक्षिण-पश्चिमी भाग से प्रवाहित होकर बण्डा तहसील, छतरपुर और टीकमगढ़ जिलों की सीमा बनाती हुई बेतवा में मिल जाती है, इसी नदी का प्राचीन नाम दशार्णा नदी था इसकी मुख्य सहायक नदियां कडान, बोकरई, उर, सपयर, रौनी, सिमटिया और सुखनई है। सुखनई नदी बल्देवगढ़ के पास से प्रवाहित होती हुई झांसी जिले के रोरा नामक स्थान के पास मिलती है। इसके तट पर मुख्य स्थान नरयावली, मैहर, बहरोल और उलदन है।

केन नदी

4यह नदी पन्ना जिले के दक्षिण पठारी भाग में स्थित शाहनगर के समीप से निकलती है तथा दक्षिण-पूर्व से पश्चिम की ओर कुछ दूरी तय करती है। तत्पश्चात छतरपुर, पन्ना की सीमा बनाती हुई उत्तर प्रदेश में बांदा जिले के चिल्ला गांव के पास यमुना नदी में मिल जाती है। इसकी सहायक नदियां व्यारमा, मिढ़ोसन, सोनार बांधन, शामरी, उर्मिल आदि है। पन्ना पहाड़ियों से मिढासन नदी निकलकर दक्षिण-पश्चिम की ओर प्रवाहित होकर संगारा गांव के पास केन से मिलती है, इस स्थणल से कुछ दूरी पर नदी मार्ग में पाण्डव प्रपात है।

शामरी नदी

बिजावर तहसील की शामरी नदी, गंगेऊ गांव के पास केन नदी में मिलती है। यही पर केन नदी पर गंगेऊ बांध बनाया गया है। यह केन की प्रथम सहायक नदी है।

बन्ने नदी

केन की दूसरी सहायक नदी बन्ने नदी है। इस नदी पर (छतरपुर) रनगुवॉं बांध बनाया गया है।

उर्मिल नदी

केन की तीसरी सहायक और महत्वपूर्ण नदी उर्मिल है। इस नदी पर पिपरा दौनी ग्राम में उर्मिल बांध बनाया गया है। जो दोनों राज्यों। को सिंचाई सुविधा उस क्षेत्र को प्रदान करती है।

केल नदी: यह नदी केन की सहायक नदी है, जो लवकुश नगर (छतरपुर) में प्रवाहित होती है।

बीना नदी

यह नदी रायसेन जिले से निकलकर सागर जिले के पश्चिम भाग में बहती हुई बेतवा से मिलती है। इसकी मुख्य सहायक नदी है। यह राहतगढ़ के पास एक सुन्दर जलप्रपात बनाती है। इसके तट पर राहतगढ़ और एरन मुख्य स्थान है।

सुनार नदी

यह नदी सागर जिले की सबसे महत्वपूर्ण नदी है। यह नदी जिले के दक्षिणी भाग से निकलकर उत्तर-पूर्व दिशा में बहती हुई जिले के बाहर केन नदी से मिलती है। बेबस एवं कोपरा इसकी सहायक नदी है। इसके किनारे शाहपुर-नरसिंहगढ़, सीमानगर, हटा और कॉंटी बसे है।

बामनेर नदी

यह नदी रहली तहसील (सागर) से निकलकर जिले के बाहर सुनार नदी में मिल जाती है।

बेबस नदी

यह नदी सागर जिले के दक्षिणी भाग से निकलकर उत्तर-पूर्व की ओर बहती हुई सुनार नदी में मिल जाती है। इसी नदी से सागर शहर को नदियों द्वारा पानी मिलता है। इसकी मुख्य सहायक नदी पड़कुल है। इसके किनारे पंचमनगर, निबोरा, जैसिंहकल, केरवन, बामौरी, लिड़ाई आदि गांव बसे है।

कोपरा नदी

यह नदी रहली तहसील (सागर) के दक्षिणी भाग से निकलकर जिले के बाहर सुनार नदी मिलती है। इसके किनारे जैतपुर, बाँसातार खेड़ी, पुरा, परासई, ढिगसर, मढ़कोला, अहिगांव बसे है।

व्यारमा नदी

यह नदी सागर जिले के रहली तहसील की जोहरी टोरिया (पहाड़ी) से निकलकर पूर्व की ओर बहती हुई दमोह जिले के हटा तहसील के खमरगोर गांव के पास सुनार नदी में मिल जाती है। गौरइया और सून इसकी सहायक नदियां है। इस नदी के किनारे तारदेही, नोहटा, घटेरा, घाट-पिपरिया, गैसावाद आदि गांव बसे है।

जामिनी नदी

जामिनी नदी सागर जिले से निकलकर टीकमगढ़ जिले की पश्चिमी सीमा बनाती हुई उत्तर में बेतवा से मिलती है। इस नदी के किनारे कुण्डेश्वर (टीकमगढ़) तथा ओरछा (निवाड़ी) पर्यटन स्थल है।

कुम्हाड़ नदी

यह नदी महाराजपुर तहसील (छतरपुर) में प्रवाहित होकर उर्मिल में मिल जाती है। इस नदी पर महाराजपुर नगर में मकर संक्रांति पर प्रतिवर्ष मेला का आयोजन किया जाता है। इस मेले का बड़ा ही सांस्कृतिक महत्व है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः प्रस्तुत शोध पत्र से हम कह सकते है कि अध्ययन क्षेत्र में नदियां कृषि के लिए अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि अपने प्रवाह क्षेत्र को उपजाऊ बना देती है, और इसका प्रभाव आर्थिक विकास पर पड़ता है। नदियों के किनारे बसे अनेक पर्यटन स्थल एवं जलप्रपात आर्थिक

दृष्टि से उस क्षेत्र में आर्थिक एवं रोजगार को बढ़ावा देते है। अतः नदियों का हमारे दैनिक जीवन में बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है।

प्रस्तुत शोध पत्र में कृषि के लिए नदियों का मूल्यांकन और कृषि विकास में उनकी अहम भूमिका को विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। चूँकि सागर संभाग की तीन चौथाई से अधिक लोगों की जीविका का मुख्य साधन कृषि है और कृषि विकास ही यहाँ के ग्रामीण विकास का पर्याय है। अतः कृषि विकास के लिए नदियों का मूल्यांकन एवं प्रबंधन एवं जल संरक्षण के लिए नितांत आवश्यक है।

संदर्भ

1. एस.एल.कायस्थ: अंप राइजल ऑफ वाटर रिसोर्सेज खण्ड नीडफार नेशनल वाटर पॉलिसी इन इण्डिया,पृष्ठ 110
2. जी.एम. स्मिथ (1966): कंजरवेशन ऑफ नेचुरल रिसोर्सेज पृष्ठ-235
3. प्रमीला कुमार (2004): मध्यप्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल पृष्ठ 7-18
4. अनुकाशित शोध पत्र (2019-20): सागर संभाग का अपवाहतंत्र
5. छतरपुर, टीकमगढ़, सागर, दमोह, पन्ना जिले का भूगोल (1970): मध्यप्रदेश पाठ्य पुस्तक निगम (भोपाल)- पृष्ठ 11,6,10,9,7